अध्याय 6

आफ्रिका
(Africa)

भारत के पश्चिम में एक विशाल महाद्वीप है। इस महाद्वीप में विस्तृत रेगिस्तान, घने जंगल, लंबी और चौड़ी नदियाँ, अनेक बड़ी झीलें और घास के मैदान हजारों मीलों तक फैले हुए हैं। वहाँ पर ऐसे जंगली जानवर हैं जो हमारे देश में नहीं पाये जाते हैं। विश्व की विशालतम सोने और हीरों की खानें भी यहाँ हैं। इस महाद्वीप का नाम आफ्रिका है। कदाचित् आप यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि आफ्रिका मानवजाति का पालना है। माना जाता है कि मानवजाति सबसे पहले आफ्रिका में विकसित हुई। तत्पश्चात अन्य महाद्वीपों की ओर अग्रसर हुई।

चित्र 6.1 युगोडा के भूमध्यरेखीय (Equitorial) वन

चित्र 6.2 केन्या में सवाना

जलवायु

चित्र 6.3 नील नदी के किनारे केरो शहर

SCERT TELANGANA

- विश्व के मानचित्र में आफ्रिका को देखिए। इसके चारों दिशाओं में व्याप्त महासागरों के नाम बताइए। इसके पड़ोसी महाद्वीप कौन से हैं?

आफ्रिका : एक विशाल पठार

आफ्रिका के भौतिक मानचित्र को देखिए। क्या आपने महाद्वीप के भीतरी भाग में विशाल मैदानों को देखा हैं? केवल तट पर हमें संकुचित मैदान मिलते हैं। शेष महाद्वीप एक विशाल पठारी भाग है। यदि आप सावधानी पूर्वक मानचित्र देखेंगे तो आप पायेंगे कि पठार की ऊँचाई एक जैसी नहीं है। नील और कांगो नदियों की घाटियों को देखिए। इस पठार पर अनेक पर्वत भी हैं। तंजानिया में किलिमंजारो आफ्रिका का सबसे उच्चतम पर्वत शिखर है।

उच्च पठार में लंबी और संकीर्ण घाटियाँ हैं। इन घाटियों में अनेक विशाल झीलें हैं।

- विक्टोरिया झील को छोड़कर आफ्रिका की दो अन्य झीलों को पहचानिए और उनके नाम लिखिए।
- आफ्रिका के मानचित्र में निम्नलिखित नदियाँ दर्शाइए। आफ्रिका के देशों को दर्शाने के लिए मानचित्र 6 का उपयोग कीजिए। निम्नलिखित नदियाँ किन देशों से गुजरती हैं और किन महासागरों में जाकर मिलती हैं।

नदी	देश	महासागर
नील नाइजर कांगो जांबेजी		

मानचित्र 1 देखिए और निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- संकुचित तटीय मैदान की औसत ऊँचाई क्या है?
- पठार के बड़े भाग की अधिकतम ऊँचाई क्या है?
- आफ्रिका के दक्षिणी और पूर्वी उच्च पठारों की ऊँचाई ....
- आफ्रिका के उत्तर में .... पर्वत है।

मानचित्र 1: आफ्रिका का उभार मानचित्र

SCERT TELANGANA

उत्तर में एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ विक्टोरिया झील के अलावा कोई नदी दिखाई नहीं देती, यह सहारा मरुस्थल है। यहाँ बहुत कम वर्षा होती है। वहाँ केवल एक नदी है। जो सहारा मरुस्थल से गुजरती है।

पठार पर कुछ विशाल झीलों को देखिए। विक्टोरिया झील आफ्रिका की सबसे बड़ी झील है। यह विश्व की शुद्ध पानी की सबसे बड़ी झीलों में से एक है। नील नदी का उद्गम इसी झील से हुआ है। वह क्षेत्र जहाँ से इस नदी का उद्गम होता है, वहाँ इतनी अधिक वर्षा होती है कि मरुस्थल से बहने के लिए यह जल पर्याप्त होता है।

नील नदी की सहायता से मरुस्थल में एक सभ्यता का विकास हुआ। मिश्र की सभ्यता कई हजारों वर्ष पुरानी है। हजारों वर्षों तक नील नदी के पानी ने मिश्र में खेतों की सिंचाई में मदद की। (मानचित्र 3 देखें।)

मानचित्र **2**:आफ्रिका - बहिरेखीय

जलवायु

यदि आप ग्लोब पर आफ्रिका को देखेंगे तो पायेंगे कि भूमध्यरेखा इसके मध्य से गुजरती है। इसलिए आफ्रिका उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में विभाजित होता है।

- आफ्रिका के दीवार मानचित्र पर कर्क रेखा को पहचानने का प्रयत्न कीजिए और मानचित्र – **2** को नामांकित कीजिए। भूमध्यरेखा के दक्षिण में मकर रेखा है। इसे दर्शाइए और इसका नाम मानचित्र में सही जगह पर लिखिए।
- क्या भूमध्य रेखा अन्य किसी महाद्वीप के मध्य से गुजरती है?

कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच के क्षेत्र की जलवायु गर्म होती है। वस्तुतः यह विश्व का सबसे अधिक गर्म क्षेत्र है। यहाँ सर्दी बहुत कम होती है। यह क्षेत्र उष्ण कटिबंधिय क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है।

- आफ्रिका के मानचित्र में इस क्षेत्र को दर्शाइए। रंग भरिए और उसके उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र को नामांकित कीजिए। कर्क रेखा के उत्तरी क्षेत्र और मकर रेखा के दक्षिणी क्षेत्र में अलग–अलग रंग भरिए।

उष्णरेखीय क्षेत्रों के इन दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों में गर्मी के साथ –साथ सर्दी भी होती है। वे समशीतोष्ण क्षेत्र कहलाते हैं।

अभी तक हम केवल गर्मी और सर्दी के बारे में बात कर रहे थे। अधिक वर्षा वाले गर्म प्रदेशों की जलवायु, कम वर्षा वाले गर्म प्रदेशों से भिन्न होती है।

SCERT TELANGANA

मानचित्र 3: आफ्रिका में वर्षा का वितरण

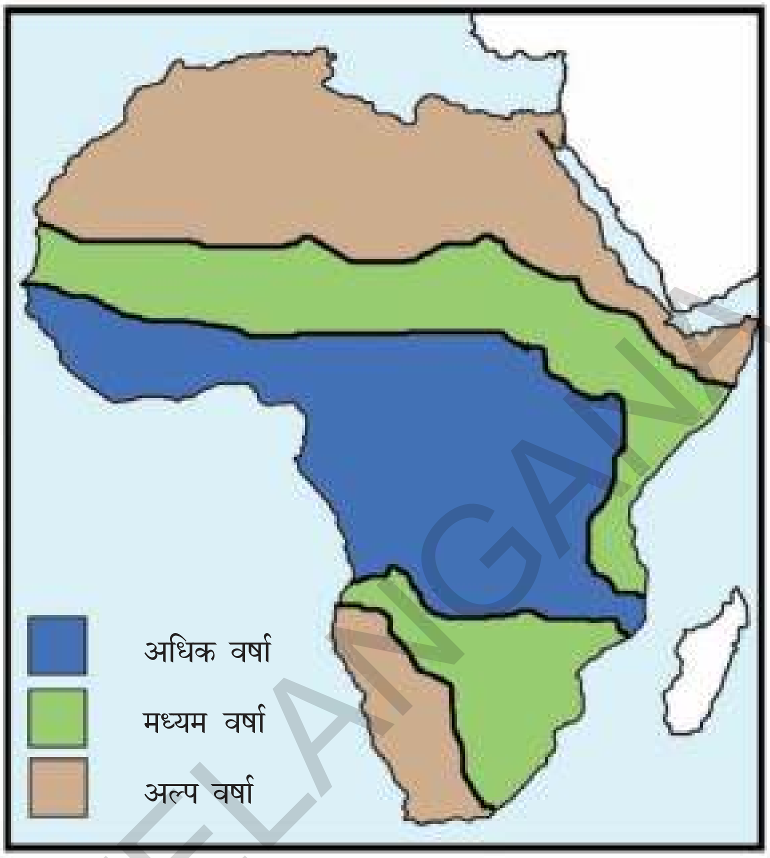

मानचित्र 4: आफ्रिका की प्राकृतिक वनस्पति

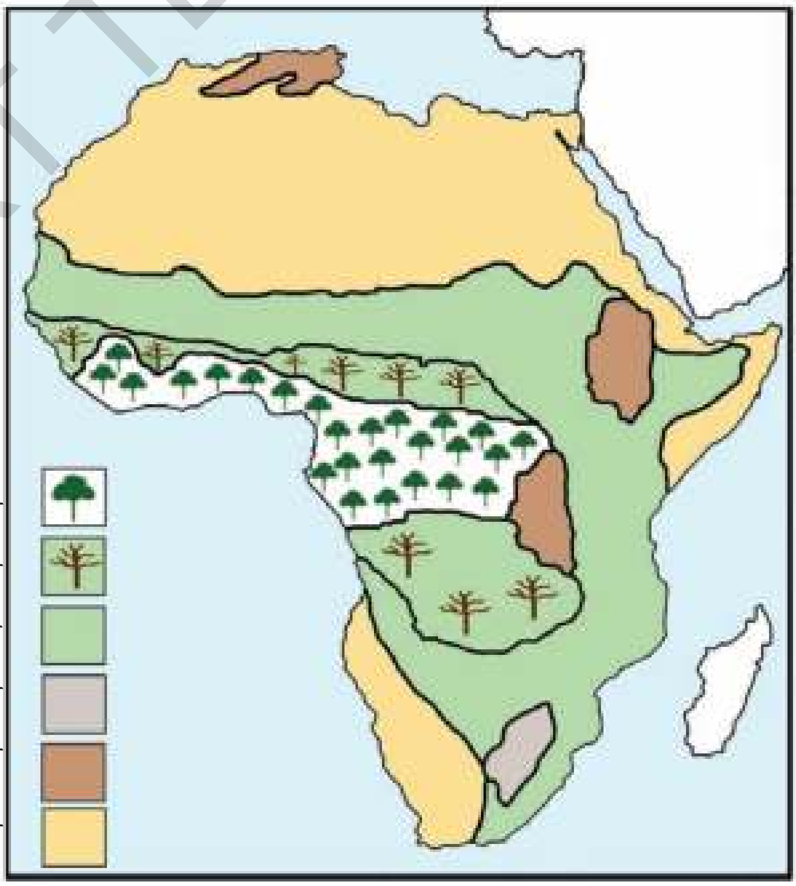

SCERT TELANGANA

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र

भूमध्य रेखा के दोनों ओर आफ्रिका के एक विशाल भाग में बहुत अधिक वर्षा होती है। मानचित्र 3 में अधिक वर्षा वाले क्षेत्र देखिए। एक ऐसा क्षेत्र मध्य और पश्चिमी आफ्रिका में है। अत्यधिक वर्षा और गर्म जलवायु के कारण इनमें घने वन हैं।

बहुत कम और मध्यम वर्षावाले क्षेत्र

मानचित्र तीन में मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र देखिए। आप देखेंगे कि मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र, इसके चारों ओर अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्र हैं। मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में केवल गर्मी में वर्षा होती है, जबकि भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में वर्ष भर वर्षा होती है।

हमारे देश के समान ही आफ्रिका के मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में निश्चित ही शुष्क और नम मौसम होता है। मध्यम वर्षा के कारण इस क्षेत्र में लंबे घास के मैदान उगते हैं। कुछ स्थानों में यह घास इतनी लंबी होती है कि हाथी भी इनमें छिप सकते हैं। यह क्षेत्र सवाना कहलाता है। मानचित्र चार में यह क्षेत्र देखिए। विभिन्न प्रकार के जंगली जानवर इस क्षेत्र में रहते हैं। आप इनके बारे में आगे पढ़ेंगे।

आफ्रिका का एक बड़ा भूभाग अत्यधिक शुष्क है, जहाँ वर्षा बहुत कम होती है या कई वर्षों से वहाँ वर्षा हुई ही नहीं है।

- मानचित्र 3 में इन शुष्क प्रदेशों को दर्शाइए।

आफ्रिका का लगभग आधा उत्तरी भाग शुष्क क्षेत्र है। यह सहारा मरुस्थल कहलाता है। इस मरुस्थल के कुछ हिस्सों में काँटेदार झाड़ियाँ और छोटी घास उगती है। अन्य भाग में रेत, पहाड़ियाँ, चट्टानें, पत्थर तथा कंकड़ फैले हुए हैं। दक्षिण में एक अन्य शुष्क प्रदेश है जो कालाहारी मरुस्थल कहलाता है।

मानचित्र 2 और 4 का अध्ययन कीजिए और उत्तर दीजिए।

- अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में .... वनस्पति होती है।
- मध्यम वर्षावाले क्षेत्रों में .... वनस्पति होती है।
- अल्प वर्षावाले क्षेत्रों में .... वनस्पति होती है।

अध्याय के आरंभ में आफ्रिका के विभिन्न क्षेत्रों के चित्र हैं। कहीं पर घने जंगल हैं, कुछ क्षेत्रों में वृक्ष और घांस साथ उगते हैं। कहीँ घास और कंटीली झाड़ियाँ हैं और कुछ क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की वनस्पति नहीं होती है।

आफ्रिका के लोग

विभिन्न भाषाओं, जीवन शैलियों और आदतों वाले लोग आफ्रिका के विभिन्न क्षेत्रों में रहते हैं। प्राचीन काल से ही लोग छोटे जनजाति समूहों में रहते हुए पशुओं का शिकार, पशुपालन और कृषि व्यवसाय करते थे। शिकारी भूमध्यरेखीय क्षेत्रों और मरुस्थलों में निवास करते थे। पशुपालक ऊँचे पठारों और सवाना में निवास करते थे और विस्तृत घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराते थे। बहुत समय तक कृषि नदी के किनारों के साथ-साथ जंगलों के कुछ भागों में की जाती थी। वहाँ समुद्री तटों पर अनेक शहर है, जहाँ व्यापारी दूर के देशों से व्यापार के लिए आते है।

चित्र 6.4 बोबाब वृक्ष

SCERT TELANGANA

आफ्रिका, यूरोप और एशिया

बहुत समय तक अन्य महाद्वीपों के लोगों को आफ्रिका के बारे में पता नहीं था। यूरोपीय लोग आफ्रिका के केवल उत्तरी तटीय क्षेत्रों से परिचित थे। जबकि भारतीय और अरब के व्यापारी पूर्वी तट के बारे में जानते थे।

- मानचित्र देखिए और अनुमान लगाइए कि यूरोपीय लोग किस प्रकार उत्तरी तटीय क्षेत्रों तक पहुँचे होंगे? यूरोप से आफ्रिका जाने के लिए किस दिशा में जाना होगा? आफ्रिका पहुँचने के लिए किस समुद्र को पार करना होगा?

इन तटीय क्षेत्रों के अलावा यूरोपीय, भारतीय और अरब के व्यापारियों को आफ्रिका के भीतरी भागों की अधिक जानकारी नहीं थी।

लगभग 500 वर्ष पूर्व यूरोपीय लोगों ने आफ्रिका का चक्कर लगाते हुए समुद्री मार्ग द्वारा भारत आने का प्रयास किया। अटलांटिक महासागर को पार करते हुए वे सेंट मेडियरा और एजोरस द्वीपों पर रुकते थे। इन द्वीपों के दक्षिण में जाने के लिए ये भयभीत रहते थे। वे सोचते थे कि दक्षिण में ये द्वीप इतने गर्म होंगे कि समुद्र का पानी उबलता होगा। तत्पश्चात वर्ष 1498 ई. में पूर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा आफ्रिका के दक्षिणी बिन्दु की यात्रा करते हुए भारत पहुँचा।

चित्र 6.5 दक्षिणी आफ्रिका में केप ऑफ गुड होप

मानचित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

- आफ्रिका से भारत पहुँचने के लिए एक व्यक्ति को किस दिशा में यात्रा करनी होगी? किस महासागर को पार करना होगा?
- क्या एशिया और आफ्रिका धरती मार्ग से जुड़े हैं?

आफ्रिका का तटीय क्षेत्र

यूरोप का अध्ययन करते समय आपने इसकी टूटी हुई तटीय रेखा पर ध्यान दिया होगा। आपने यूरोप की खाड़ियों का अध्ययन किया ही होगा। पुनः स्मरण करने का प्रयास कीजिए कि किस प्रकार इनसे यूरोपियों को समुद्री यात्रा में मदद मिली।

- आफ्रिका के तट की ओर देखिए। क्या आपको टूटा हुआ तट दिखाई दे रहा है, या सीधा तट?
- क्या आपको यूरोप के समान यहाँ भी तटीय क्षेत्र व खाड़ियाँ दिख रही हैं? मानचित्र 6 आफ्रिका के निकट की एक खाड़ी और तटीय क्षेत्र का नाम मान चित्र -6 में देखकर बताइए।

आरंभ में जब यूरोपीय लोगों ने आफ्रिका के भीतरी भागों में जाने का प्रयत्न किया तब आफ्रिका की जनजातियों ने उनसे प्रत्यक्ष संघर्ष किया। यूरोपीय लोग गलत तरीके से व्यापार में लिप्त थे। उन्होंने आफ्रिका के लोगों को गुलाम बनाकर विदेशों में बेचने का प्रयास किया। यूरोपीय लोग आफ्रिका में अपना शासन स्थापित कर संसाधनों का शोषण करना चाहते थे। इसी कारण आफ्रिका के लोगों ने विदेशियों द्वारा उनकी भूमि पर अधिकार करने के प्रयासों को रोका।

दास व्यापार

सोलहवीं सदी में अनेक यूरोपियों ने अमेरिका की ओर गमन कर वहाँ कृषि करना आरंभ किया। अमेरिका में बहुत भूमि थी किन्तु खेतों में काम करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं थे। इसके लिए अतिरिक्त लोगों की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए आफ्रिका से दास व्यापार आरंभ हुआ।

SCERT TELANGANA

गियाना के तटीय क्षेत्रों के साथ-साथ पूर्वी आफ्रिका के लोगों पर मुख्य रूप से अधिकार कर उन्हें दास बनाया गया। अधिकृत लोगों को समुद्र तट पर लाया गया और उन्हें यूरोपियों को बेच दिया गया। दासों के बदले में जनजाति नेता बंदूकें, लोहे की वस्तुएँ, शराब तथा कपड़े स्वीकार करते थे।

चित्र: 6.6 दास

दास बहुत पीड़ित थे। कई दासों की तो बंदरगाह तक पहुँचते-पहुँचते ही मृत्यु हो जाती गयी थी। जहाज दासों से भरे रहते थे। भोजन और औषधि का कोई उचित प्रबंध नहीं था। अमेरिका पहुँचने के लिए कई दिन लग जाते थे। बिमारी और कुपोषण के कारण कई दास अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाते थे।

अमेरिका में भी उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। कठोर परिश्रम के बावजूद भी उन्हें उचित भोजन और रहने के लिए घर नहीं दिये जाते थे। इस प्रकार लाखों अफ्रीकी लोगों को दास बनाकर उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका और उनके आसपास के द्वीपों को ले जाया गया। दास बनने के बाद लाखों लोगों की मृत्यु हो गयी थी। सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में अनेक कंपनियाँ दास व्यापार में लिप्त थीं। अंततः उन्नीसवीं सदी में दास व्यापार का अंत हुआ और 1860 में अमेरिका में दासों को स्वतंत्र नागरिक घोषित किया गया।

यूरोपीय उपनिवेश

आरंभ में आपने पढ़ा कि यूरोपीय आफ्रिका का चक्कर लगाकर भारत पहुँचे। तदंतर यूरोपियों ने आफ्रिका के बंदरगाहों पर रुकना आरंभ किया। धीरे-धीरे पुर्तगाली, डच, अँग्रेज़, फ्रेंच और जर्मन लोगों ने भी आफ्रिका के भीतरी भागों में पैर जमाये और इन क्षेत्रों को उपनिवेश बनाना शुरु किया। आफ्रिका का राजनीतिक नक्शा, मानचित्र में दिया गया है। 19वीं सदी के यूरोपीय उपनिवेशियों द्वारा बनाये गये उपनिवेश क्षेत्र इस मानचित्र में दर्शाये गये हैं।

मानचित्र 5 1913 में आफ्रिका में यूरोपीय उपनिवेश

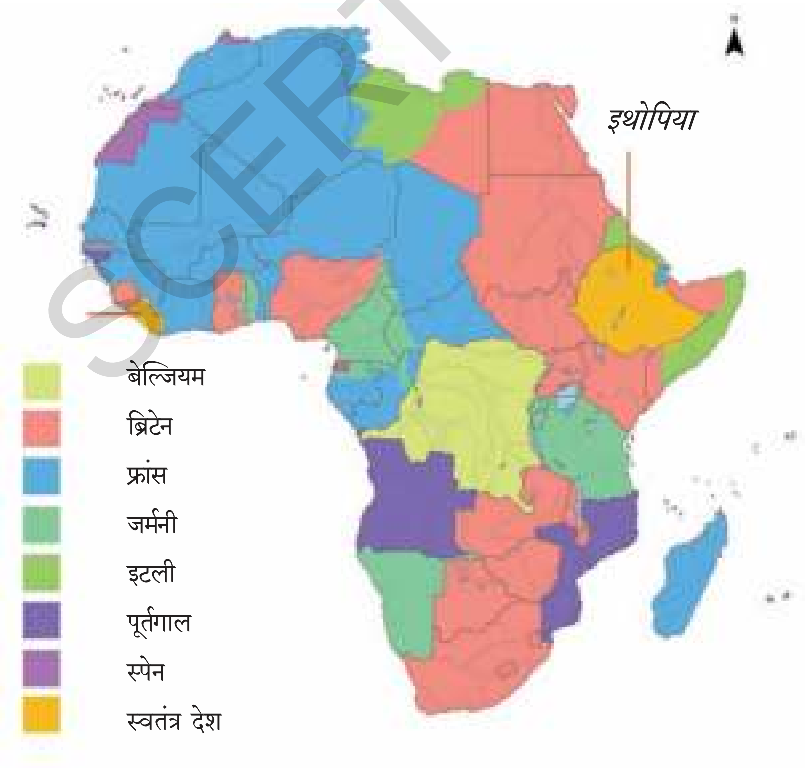

- क्या आप यूरोप के मानचित्र में उन देशों को पहचान सकते हैं, जिन्होंने आफ्रिका में उपनिवेश स्थापित किये।
- किन यूरोपीय देशों ने सूडान और जायर में उपनिवेशीकरण किया ?

SCERT TELANGANA

- क्या आप आफ्रिका के किसी ऐसे क्षेत्र को बता सकते हैं, जहाँ उपनिवेश नहीं बसाये गये?

आफ्रिका में उपनिवेशों के निर्माण के प्रयासों के साथ-साथ यूरोपीयों ने महाद्वीप के आंतरिक भाग की खोज जारी रखी। उन्होंने उत्तर में नील नदी के उद्‌गम तक की यात्रा की। पश्चिम में उन्होंने पूरी नाइज़र घाटी की खोज की और दक्षिण में केप टाउन से उत्तर की ओर आगे बढ़े। वहाँ उन्होंने झंबेजी नदी के चारों ओर के क्षेत्र की खोज की।

यूरोपीयों ने आफ्रिका की लकड़ी और खनिज का अति विशाल पैमाने पर यूरोप को निर्यात किया। वस्तुतः दक्षिणी आफ्रिका की सोने और हीरे की खाने अभी भी यूरोपीय कंपनियों के नियंत्रण में हैं। जांबिया और जिंबांबे में ताँबे की अमूल्य खाने हैं। बहुत समय से ही इस खनिज का महत्वपूर्ण निर्यात वस्तु माना जाता है।

यूरोपीयों ने आफ्रिका के संसाधनों का निर्यात नहीं रोका। चाय, कॉफी, रबर, तंबाकू आदि उगाने के लिए उन लोगों ने कई बगीचे बनाये। ये उत्पाद भी यूरोप को निर्यात किये गये।

नाइजीरिया में वृक्षारोपण

आप चाकलेट खाने के शौकिन होगे। यह कोको से बनी जाती है जो नाइजीरिया में होता है। कोको के अतिरिक्त दक्षिणी नाइजीरिया में रबड़ की बागवानी, पामतेल के बगीचे पाए जाते है। हर वर्ष जनजाति के लोग जंगल का एक छोटा भाग साफ करते थे और वृक्षों की लकड़ी जला देते थे। अधिकतर वे लोग काम को बाँट देते थे और कटाई के समय एक दूसरे की सहायता करते थे। नाइजीरिया में किसान केवल अपने परिवार की आवश्यकतानुसार फसल बोता था। कुल्हाड़ी से वे लोग खेत को खोदते थे। बैल और घोड़े का प्रयोग भी वे लोग खुदाई के लिए करते थे। आज तेजी से वस्तुएँ परिवर्तित हो रही है। आज लोग बाजारी स्तर पर उत्पादन कर रहे है। शुष्क एवं आन्तरिक क्षेत्रों में कपास का उत्पादन कारखानों के लिए किया जाता है।

लोग नाव से नाईजर नदी को पार कर जाते है और उन वनों से पाम फल लाते है। आरम्भ में यह वृक्ष जंगली वनों में पाए जाते थे। जैसे ही इसकी माँग बढ़ने लगी, वनों के भाग को साफ कर वहाँ उसकी बागवानी की जाने लगी। कोको, रबड़, पाम तथा पाम तेल कानिर्यात किया जाने लगा और नाइजीरिया की विदेशी मुद्रा का अर्जन का साधन बना।

- मानचित्र 4 में नाइजीरिया के उन भागों को ढूँढ़िए, जहाँ ये फसले उगाई जाती है।

अंग्रेजो ने बागवानी आरम्भ की क्योंकि वे जंगलों से प्राप्त होने वाले उत्पादन से संतुष्ट नहीं थे। वे अधिक उत्पादन कर निर्यात करना चाहते थे।

बागवानी में उनके लिए कई चीजे आसान कर दी। सबसे पहले यह कोई कठिन कार्य नहीं था कि जंगल में जाकर वृक्ष का पता लगाना। एक ही स्थान पर वृक्ष लगाने से इनकी देखभाल करना सरह होता है। उत्पादन की कटाई भी बहुत सरल हो गई। व्यापार के लिए उत्पादन में वृद्धिआवश्यक बन गई। नाइजीरिया के लोग इन बगीचों में काम करने लगे, उस समय अंग्रेज प्रबंधक थे। इस प्रकार व्यवसायिक कृषि जैसे पाम कोको और रबड़ का उत्पादन नाइजीरिया में होने लगा।

इतना ही नहीं, कई बगीचों के पास ही कारखाने लगाए जाने लगे, जैसे कोको फल से तेल निकालना, उसे सुखाना, ताड़ के फल से तेल निकालना रबड़ के पेड़ से दूध निकालना आदि काम किया जाने लगा। कोको, ताड़ और रबड़ का अधिकांश लाभ ब्रिटिशों को मिलता था। अधिक लाभ मिलने लगा। नाइजीरिया के लोग वहाँ कृषक मजदूर के समान काम करते थे। भारत में अंग्रेजों के काल में चाय, काफ़ी जैसे बागवानी व्यवसाय की दृष्टि से आरम्भ की गई। 1960 में स्वतन्त्रता मिलने तक नाइजीरिया अंग्रेजों के अधीन था। उसके पश्चात बागवानी एवं बागवानी व्यवसाय नाइजीरिया के लोगों के अधिकार में आ गया और वह उनके लिए लाभदायी रहा।

स्वतंत्र आफ्रिका

पिछली सदी के दौरान अफ्रीकी देश क्रमशः यूरोपीय शक्तियों के नियंत्रण से मुक्त होने लगे। नये देश अस्तित्व में आये। यहाँ लोगों ने अपनी सरकार का निर्माण किया। अभी तक अनेक यूरोपीय अफ्रीकी देशों में ही रह रहे हैं। किन्तु धीरे-धीरे अफ्रीकी लोग उनकी भूमि, वनों, खदानों

SCERT TELANGANA

और कृषि उत्पादनों पर नियंत्रण वापस ले रहे हैं और उनका लाभ उठा रहे हैं।

आफ्रिका के खनिज़

यह महाद्वीप कोयला, ताँबा, टीन, आदि जैसे खनिज़ों में धनी है। इसके अतिरिक्त विश्व में सोने और हीरे का प्रमुख उत्पादक है। यूरोपीयों का प्रमुख लक्ष्य यह था कि आफ्रिका के श्रमिकों से श्रम करवा कर इस संसाधनों को लूटना। आज तक भी अधिकतर खदाने एवं कंपनियों पर इन्हीं का नियंत्रण है।

उदाहरण के लिए तेल या पेट्रोलियम नाइजीरिया के महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाथन है। नाइजीरिया में तेल, खनिज़ एवं शुद्धिकरण पर ड़चो का नियंत्रण था। 1958 से नाइजीरिया से खनिज तेल का निर्यात किया जाने लगा। हारकौट और वारी बन्दरगाह के समीप तेल शुद्धीकरण के कारखाने स्थापित किए गए।

अधिक कारखाने आज भी यूरोपीयों के हाथ में है। नाइजीरिया सरकार की भागीदारी कम मात्रा में है। ऐसी ही स्थिति आफ्रिका से उत्पादित अन्य खनिज़ों के साथ भी है।

इन विदेशी कंपनियों ने तकनीकी एवं इन खनिज़ो और कारखानों की प्रक्रिया में अधिक लागत लगाई जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। कैसे भी वे आफ्रिकी लोगों से अधिक लाभ कमाने के लिए सस्ते मजदूर लेते थे। इनमें से अधिक कम्पनियाँ वातावरणीय प्रदूषण से भी लापरवाह थी। इस कारण प्राकृतिक वातावरण को अधिक दूषित किया। इससे भूमि की गुणवत्ता एवं मनुष्यों के जीवन पर प्रभाव पड़ा।

- मानचित्र 7 में रंग भरकर और नाम लिखकर आफ्रिका के देशों के बारे में परिचय प्राप्त कीजिए।

मुख्य शब्द :

1. उपनिवेश (Colonies)
2. दास (Slave)
3. पठार (Plateau)

हमने क्या सीखा?

1. यूरोप से उत्तरी आफ्रिका तक पहुँचने के लिए किस समुद्र को पार करना होगा?
2. आफ्रिका के भीतरी भागों तक पहुँचने के लिए यूरोपीयों के सम्मुख आयी तीन कठिनाइयाँ बताइए।
3. आफ्रिका के दो विशाल मरुस्थलों के नाम बताइए।
4. इस अध्याय में आफ्रिका के दो मानचित्र दिये गये हैं। तुलना करो और बताओ कि वर्तमान नाइज़ीरिया और जिम्बाबवे देशों पर किस यूरोपीय देश का नियंत्रण है?
5. आफ्रिका के किन्हीं दो देशों के नाम बताओ जहाँ भूमध्य सागरीय जंगल पाये जाते हैं।
6. यूरोपीयों ने आफ्रिका के साथ किन चीज़ों का व्यापार किया? उन्होंने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए किस प्रकार से कृषि को बढ़ावा दिया?
7. दास व्यापार से किसका लाभ हुआ? अमेरिका के लोगों को दासों की ज़रूरत क्यों थी?
8. आप कैसे कह सकते है कि दास व्यापार उच्च पाप है?
9. इस अध्याय का अन्तिम अनुच्छेद पढ़िए और टिप्पणी लिखिए।

SCERT TELANGANA

मानचित्र **6:** आफ्रिका के देश

इस मानचित्र को मानचित्र 6 की सहायता से भरिए। सभी देशों को अलग अलग रंग दीजिए। ध्यान रहे कि पड़ोसी देशों को एक ही रंग न मिले।

मानचित्र **7:** आफ्रिका के देश

SCERT TELANGANA